Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-11, Dec-2013 Available online at www. isrj.net

जनकवि नागार्जुन की प्रगतिशील रचनाधर्मिता

पल्लवी प्रकाश
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी. (हिंदी), जे.एन.यू., नई दिल्ली.

सारांश---आधुनिक युग में कविता और कवि दोनो के ही उत्तरदायित्व बढ गये हैं. आज की भागम-भाग भरी जिंदगी में ऐसी कविता की जरुरत है जो जीवन के कठोर यथार्थ को सामने रख कर मनुष्य को कर्मक्षेत्र की तरफ अग्रसर करे. नागार्जुन एक ऐसे ही कवि हैं जिन्होने प्रगतिशील जीवन-मूल्यो को अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है और जो सच्चे मायने में जन-कवि हैं.

प्रस्तावना –

नागार्जुन उन विरल कवियो में से हैं, जिन्होने कविता की सम्भावना का विस्तार किया है और जो अपने प्रखर आलोचनात्मक विवेक के आधार पर अपनी कविता की एक स्वायत्त पहचान बनाने में सफल रहे हैं. कबीर, भारतेंदु और निराला की परम्परा के सच्चे उत्तराधिकारी नागार्जुन अकारण ही जनकवि के रुप में स्वयँ को प्रस्तावित नहीं करते. सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियोँ के प्रति विद्रोह का स्वर उठाने तथा समाज के उपेक्षित–शोषित वर्ग से भावात्मक तादातम्य रखने के कारण ही वह व्यापक अर्थ में प्रगतिशील हैं और सही मायने में जनकवि हैं.

नागार्जुन की कविताये अपने समय का जीवंत इतिहास भी हैं जिसमें एक पूरी शताब्दी की सामाजिक-राजनीतिक हलचलो को भी देखा-समझा और महसूस किया जा सकता है. अपनी कविताओ में उन्होने जो कुछ भीलिखा है, उसे जीवन में खुद जिया भी है और सिद्धांत एवम व्यवहार का यह तालमेल बहुत ही कम रचनाकारोँ के यहाँ दृष्टिगत होता है.

नागार्जुन के कवि व्यक्तित्व का मूल मंत्र है प्रतिबद्धता और यह प्रतिबद्धता किसी वैचारिक चहारदीवारी के प्रति न हो कर सम्पूर्ण जीवन के प्रति है, समता, समाजवाद, और क्रांति

के प्रति है और उपेक्षितों, शोषितों और वंचितों की बेहतरी के एक विराट सपने के प्रति है. अपने इसी काव्यादर्श का इज़हार करते हैं वे---

" प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त

अत: स्पष्ट है कि नागार्जुन की प्रतिबद्धता संकुचित नहीं है. किसान, मजदूर,दलित और शोषित वर्ग के चित्र उनकी कविताओं में बार-बार और अनेक शक्लों में आते हैं-

खुब गये
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाईयों वाले खुरदुरे पैर

मजदूरी की कठोर, मेहनती जिंदगी के प्रति तिरस्कार की बजाय आदर और सम्मान का भाव पैदा हो,यही गहरी छट्पटाहट उनसे कहलवा रही है---

छूती है निगाहों को
कत्थई दाँतों की मोटी मुस्कान
बेतरतीब मूँछो की थिरकन
सच-सच बतलाओ
घिन तो नहीं आती है?

नागार्जुन की कवितायें पाठ्क से सहज रुप से सम्वाद स्थापित कर लेती हैं और जटिल से जटिल बातों को भी सरलता से कह जाती हैं1 इस अर्थ में नागार्जुन गहरे स्तर पर बात के भी कवि हैं -------"बातें

यही अपनी पूंजी, यही अपने औज़ार.
यही अपने साधन,यही अपने हथियार.''

नागार्जुन की काव्य-ऊर्जा किसी भी विषय को छू कर उसकी काव्यात्मक सार्थकता को पाठक के लिये आस्वाद्य बनाने में सक्षम है. यही कारण है कि सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों के

अतिरिक्त राजनीतिक विद्रूपताओँ का भी यथार्थ वर्णन उनके यहाँ मिलता है. नागार्जुन के यहाँ रचना और राजनीति परस्पर सम्बद्ध हैं, उन्हे अलगा पाना सम्भव नहीँ. माना जाता है कि एक कवि के लिये वास्तविक राजनीतिक कविता लिखना क्रांतिकारी जीवन जीने से भी ज्यादा कठिन कर्म है. इस दृष्टि से नागार्जुन को एक सशक्तम राजनीतिक कवि माना जा सकता है. एक सच्चे क्रांतिकारी के समान ही वह यथास्थिति को जीवन और कविता दोनोँ में तोड़ते नजर आते हैं.''नदियाँ बदला लेंगी '' कविता में वे कहते हैं-

'' इस होली में भूमिहीन की किस्मत का भुट्टा सिंकता है
खेती में बंदूकेँ उगती ट्के सेर तो बम बिकता है.
क्रांति दूर है, सच-सच बतला, बुद्धू तुझको क्या दिखता है.''

नागार्जुन, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनोँ के विविधस्तरीय प्रयासोँ से स्वयँ भी जुड़े रहे हैं, यही कारण है कि उनकी जनचेतना किताबी मार्क्सवाद के लिये दिक्कत पैदा करती है. जनसाधारण का उग्र और उद्दाम शोषण देख कर वर्ग घृणा उनके लिये अत्यंत स्वभाविक हो उठती है और वे कह उठते हैं-

''हिंसा मुझसे थर्राएगी
प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि का''

उपरोक्त पंक्तियो के आधार पर प्राय: नागार्जुन को प्रतिहिंसा का ही कवि घोषित कर दिया जाता है जबकि ऐसा नही है. प्रतिहिंसा नागार्जुन के यहाँ शोषितो और वंचितो की रक्षा के लिये उपजी भावना है. डॉ. मैनेजर पांडे के अनुसार,'' जनकवि नागार्जुन को जन-आंदोलनो में अपनी कविता की चरितार्थता दिखायी देती है, उससे उन्हे नयी ऊर्ज़ा मिलती है, अपने दायित्व का बोध होता है.(1)''प्रगतिशील कविता की निजी उपलब्धि है—पक्षधर की भूमिका. इससे पूर्व कलाधर या रचयिता होना ही पर्याप्त समझा जाता था. नागार्जुन ने पक्षधर की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कविता को नया जीवन दिया. ''पक्षधर'' कविता में वे कहते हैं---

''विजयिनी जनवाहिनी का पक्षधर होना पडेगा
अगर तुम निर्माण करना चाहते हो

व्यंग्य नागार्जुन की कविता का एक प्रमुख अस्त्र है जो कि सामाजिक विषमता की उपज है. व्यंग्य की इसी विदग्धता के कारण नामवर सिंह ने नागार्जुन को कबीर के बाद हिंदी कविता का सबसे बडा व्यंग्यकार माना है''.(2) सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियो में से कोई भी उनके व्यंग्य की प्रभाववत्ता से अछूती नही रह पाई है. युगीन वेदना को अभिव्यक्त करती है उनकी कविता ''अकाल और उसके बाद''. ऋणात्मक और धनात्मक जीवन-स्थितियो के योग से अपने ढंग की अकेली और विलक्षण कविता लिखने का श्रेय भी नागार्जुन को ही है. उनकी प्रगतिशील दृष्टि किसी भी प्रकार के भेद-भाव के खिलाफ है. साम्प्रदायिकता के विष-वृक्ष को काट डालने के लिये वे कृतसंकल्प है. शपथ नामक कविता में वे अपने इसी संकल्प को दोहराते हैं.

1—प्रो. मैनेजर पांडेय, आलोचना की सामाजिकता, वाणी प्रकाशन, प्र. संस्करण,पृष्ठ—194
2---डॉ. नामवर सिंह, साक्षात्कार, अगस्त 2001, पृ.—21

भूमि-संघर्ष के समर्थन में यदि वह ''भोजपुर'' कविता लिखते हैं तो वर्ण-संघर्ष की बात करते हैं ''हरिजन-गाथा'' में. नागार्जुन के रचनाकार व्यक्तित्व में व्यंग्य, करूणा, राष्ट्र-प्रेम और प्रकृति-प्रेम सब परस्पर सम्बद्ध हैं. रूप, वर्ण, गंध, स्वाद, स्पर्श का जैसा चित्रण उनके यहाँ मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है ''पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने'' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

'' निशा शेष ओस की बूंदियो से लदी है
अगहनी धान की दुद्धी मंजरियाँ
पाकर परस प्रभाती किरणो का
मुखर हो उठेगा इनका अभिराम रूप ''

नागार्जुन की व्यापक प्रगतिशील दृष्टि सौंदर्य को जीवन और जिजीवषा से जोड़ कर देखती है. दैहिक प्रेम उनके यहाँ वृथा ना हो कर जीवन का एक हिस्सा है—

'' कर गयी चाक/ तिमिर का सीना
जोत की फाँक/ यह तुम थी ''

वस्तुतः उनका प्रेम संकुचित नही है. उनके यहाँ प्रेम में एक तरह का फैलाव है जिसमे जीव-जगत की स्मृतियाँ प्रिया की स्मृतियो के समानांतर चलती हैं

जीवन-पूर्णता, शिल्प-पूर्णता, बहुअर्थमयता, नैतिक संवेदना और जीवंत विकलता नागार्जुन के काव्य में भली-भांति व्यक्त हुए हैं. अतः नागार्जुन की रचनाधर्मिता में सच्चे अर्थो में प्रगतिशील मूल्यभीअंतर्निहित हैं.

संदर्भ ग्रंथ---

1---नागार्जुन, प्रतिनिधि कविताये, राजकमल पेपरबैक्स, बारह्वाँ संस्करण—2013
2-प्रो. मैनेजर पांडेय, आलोचना की सामाजिकता, वाणी प्रकाशन,प्र. संस्करण-2005
3-डॉ. नामवर सिन्ह,कविता के नये प्रतिमान,राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण—1990
4—राजेंद्र यादव, (सँ.) हंस, अगस्त, 2013